पाश्चात्य चिन्तन परम्परा में 'दर्शन' का अर्थ

पाश्चात्य चिंतन के क्षेत्र में प्रयुक्त अंग्रेजी का 'फिलॉसपफी' (Philosophy) शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों से व्युत्पन्न है। इन्हें क्रमशः 'फिलॉस' (Philos) और 'सोफिया' (Sophia) के नाम से जाना जाता है। 'फिलॉस' पद का प्रयोग ग्रीक भाषा में प्रेम अथवा अनुराग (Love) के अर्थ में किया गया है। इसी प्रकार 'सोफिया' का प्रयोग ज्ञान या विवेक (Knowledge or Wisdom) को निर्दिष्ट करने के लिए किया गया है। दर्शनशास्त्र में 'ज्ञान' आधुनिक पाश्चात्य दर्शन (Knowldedge) शब्द का प्रयोग कभी–कभी 'विवेक' (Wisdom) के अर्थ में भी किया जाता है। किन्तु व्यवहार में 'ज्ञान' (नॉलेज) का प्रयोग साधारण अर्थ (Ordinary Sense) के साथ–साथ वैज्ञानिक संदर्भों में भी किया जाता है। वस्तुतः पाश्चात्य दर्शन में 'नॉलेज' शब्द का प्रयोग भारतीय प्रमाण मीमांसा में प्रयुक्त 'प्रमा' (Valid or True Cognition), अर्थात् वैध अथवा सत्य ज्ञान के अर्थ में किया गया है। व्यवहार में इसका (नॉलेज का) अनुवाद संस्कृत या हिन्दी भाषा में प्रचलित ज्ञान के अर्थ में किया जाता है। किन्तु भारतीय दार्शनिकों ने ज्ञान का वर्गीकरण 'सत्य ज्ञान' के साथ–साथ 'असत्य ज्ञान' के रूप में भी किया है। तकनीकी दृष्टि से 'नॉलेज' का अनुवाद 'प्रमा' के अर्थ में करना अधिक समीचीन माना गया है। पश्चिम में 'फिलॉसपफी' का प्रयोग इसी नॉलेज अथवा विवेक के प्रति बौद्धिक प्रेम के अर्थ में किया गया है। विवेक के प्रति बौद्धिक प्रेम एक प्रकार की जिज्ञासा का द्योतक है। प्राचीन ग्रीक विचारकों ने सृष्टि एवं मानव–जीवन के मूल आधारों की खोज के साथ–साथ ग्रहों, नक्षत्रों, तारा–मंडल, गणित आदि के विषय में जानने की उत्सुक्ता (Curiosity) व्यक्त किया। उन्होंने ब्रह्मांड (Universe) और मानव–जीवन के स्वरूप एवं लक्ष्य से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का अध्ययन फिलॉसपफी के अन्तर्गत किया।

किन्तु पश्चिम में फिलॉसपफी की कोई निश्चित परिभाषा देना संभव नहीं है क्योंकि प्राचीन काल से लेकर बीसवीं शताब्दी तक वहाँ दार्शनिक चिंतन का स्वरूप और लक्ष्य विभिन्न युगों और परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। इसके फलस्वरूप वहाँ इसका प्रयोग तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा, विश्लेषण, द्वितीय क्रम की गवेषणा (The Second Order-Inquiry), निकषमीमांसा (Criteriology) आदि के संदर्भ एवं अर्थ में किया जाता रहा है। मध्यकाल में ईसाई

धर्म से प्रभावित दार्शनिक सिद्धांतों को छोड़कर 'फिलॉसपफी' का प्रयोग 'समालोचनात्मक अनुशीलन' के ही अर्थ में किया गया है। किन्तु समालोचनात्मक चिन्तन (Critical Refelction) पर आधारित दार्शनिक ज्ञान स्वयंकल्पित एवं स्वतःप्रेरित अथवा स्वतःस्पूफर्त होता है। इससे स्पष्ट है कि दार्शनिक अनुशीलन किसी के उपर बलपूर्वक थोपा नहीं जा सकता है। यह ज्ञान के प्रति बौद्धिक अनुराग और श्रद्धा के बिना संभव नहीं है। अतः पश्चिम में फिलॉसपफी को ज्ञान अथवा विवेक के प्रति (बौद्धिक या सुक्तिसंगत) प्रेम अथवा श्रद्धा कहा गया है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति विवेक के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम से युक्त होता है, वही सद्गुणी भी हो सकता है। इसीलिए सुकरात ने ज्ञान (विवेक) और सद्गुण में तादात्म्य (अभेद) स्थापित किया।

0000